'स्वाधीनता ही साहित्य का आधार और स्वप्न है'

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 13 मार्च।

साहित्य अकादेमी की ओर से 11 मार्च से शुरू हुए साहित्योत्सव के चौथे दिन का मुख्य आकर्षण तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ था, जो 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर साहित्य का प्रभाव' विषय पर केंद्रित है।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि स्वाधीनता मानवीय शब्दकोश का सबसे पवित्र शब्द है। उसकी चेतना, मनुष्य ही नहीं जीव मात्र में नैसर्गिक रूप से विद्यमान होती है। दुनियाभर के मनुष्य ने स्वाधीनता के लिए जितने बलिदान दिए हैं, शायद ही किसी अन्य मूल्य के लिए दिए हों। हरीश त्रिवेदी ने कहा कि उस समय के राजनीतिज्ञ जो लिख रहे थे वह सृजनात्मक साहित्य तो नहीं था लेकिन उसका प्रभाव किसी कविता या कहानी से कम प्रभावित करने वाला नहीं था और उस समय उसकी ज्यादा जरूरत थी।